21

क्रूस का आकर्षण

1 कुरिन्थियों 1:18; गलातियों 6:14

''और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूगा'' (यूहन्ना 12:32)।

क्रूस हमें इतना आकर्षित क्यों करता है ?

यह हमारी समझ को आकर्षित करता है। मसीहियत का आरम्भ इतिहास की एक घटना से हुआ। इसे एक विचार, दर्शन या कथन नहीं कहा जा सकता। यह एक व्यक्ति (यीशु मसीह) है। यह परमेश्वर की बात ही नहीं, बल्कि परमेश्वर का काम भी है।

सांसारिक मापदण्ड के अनुसार मसीह का जीवन एक असफलता था। रोम और यरूशलेम को कोई फर्क नहीं पड़ा था। स्वर्ग पर उठाए जाने के समय यरूशलेम में यीशु ने परमेश्वर का भय मानने वाले केवल 120 चेलों को ही छोड़ा था (प्रेरितों 1:11-15)। वे गुमनाम गरीब और बिना किसी राजनैतिक शक्ति के लोग थे (प्रेरितों 4:13)। परन्तु पिन्तेकुस्त के दिन पतरस और अन्य प्रेरितों के प्रचार करने से तीन हज़ार लोगों ने बपतिस्मा लिया था। इस पर विचार करने वाला हर व्यक्ति यही निष्कर्ष निकालेगा कि इतिहास की सबसे बड़ी घटना यीशु का हमारे लिए मरना है। परमेश्वर, जिसने हमें बनाया था, अपने पुत्र में हमारे जैसा बन गया। पृथ्वी पर हमारे साथ रहा और अपने कन्धों पर क्रूस उठाकर वह हमारे पाप क्रूस पर ले गया! कितना अद्‌भुत अनुग्रह है!

पृथ्वी पर मसीह के क्रूस से शक्तिशाली और कोई चीज़ नहीं है। संस्कृतियों में क्रूस के बिना मसीह को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है। मानवतावाद बिना क्रूस के मसीह को प्रस्तुत करता है। एक तो बलिदान के बिना धर्म है, जबकि दूसरा धर्म के बिना बलिदान है। दोनों ही नाकाम हैं।

क्रूस हमारे मन की भावनाओं को आकर्षित करता है। क्रूस पर यीशु का मरना हमें अन्दर तक झिंझोड़ देता है; यह हमारे अन्दर आग लगा देता है। इसका अर्थ हमारे मनों को परेशान कर देता है। यीशु ने कहा, ''और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूगा'' (यूहन्ना 12:32)। क्रूस का चुम्बक लोगों को परमेश्वर की ओर खींचता है। जितना आप इसके निकट आते हैं उतना ही इसका आकर्षण बढ़ता है। आप कांप जाते हैं; आप पुकार उठते हैं; आप आनन्दित होते हैं! क्रूस पर विचार किया जाना और इसे ग्रहण करना जुनून के साथ होता है। उद्धार दुकानों में नहीं मिलता। आपके अन्दर वही भावना, हमदर्दी, क्रोध और प्रसन्नता खुद-ब-खुद आ जाती है। हर दिन कुछ नया, अलग और मन को छू लेने वाला होता है जो इसमें

से निकलता है।

क्रूस हमारी मानवीय प्रतिष्ठा को आकर्षित करता है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ज़बर्दस्ती कर सकता था, लेकिन वह हमें अवसर देता है। परमेश्वर ज़ोर-जबर्दस्ती से कुछ नहीं कराता। यीशु लोगों को परमेश्वर की ओर खींचता है, हांकता नहीं (यूहन्ना 6:44-47)। क्रूस लोगों को हांकता, धमकाता या उनके साथ चालाकी नहीं करता। पौलुस ने यीशु के पृथ्वी पर के जीवन को ''भक्ति का भेद'' कहा है (1 तीमुथियुस 3:16)। कोई ''पौराणिक कथा'' मनुष्य को बदल नहीं सकती। यीशु लोगों को बदलता है। उसका प्रेम लोगों को बदलता है। उसने हमसें इतना प्रेम रखा कि हमारे लिए अपना प्राण भी दे दिया, ताकि हम अनन्तकाल तक उसके साथ रह सके, परन्तु वह हमें यह निर्णय लेने का अधिकार देता है।

क्रूस नैतिक ज़िम्मेदारी की हमारी समझ को आकर्षित करता है। क्रूस संसार में से सब ''घटनात्मक'' चीज़ों के लिए परमेश्वर का ''धनात्मक'' चिह्न है। इसके कदमों में आकर उदासीन नहीं रहा जा सकता। षड्यंत्रकारी कायफ़ा, कायर पिलातुस और निर्दयी हेरोदेस का फैसला इतिहास ने कर दिया है। इनमें से विजय किसकी हुई? यीशु मसीह की! वह हमें अपनी विजय में शामिल होने और दूसरों को अपने साथ मिलाने के लिए बुलावा देता है। क्रूस का कोई सिरा नहीं है। यह दूसरों को दिया जाना आवश्यक है। क्योंकि किसी को दी जाने वाली वास्तविक चीज़ यही है। हमारे किए हुए किसी भी काम का लम्बे समय तक कोई उपयोग नहीं है! यह सोचा भी नहीं जा सकता कि पापी लोग किसी दूसरे के द्वारा महिमा पाएं।

क्रूस की कहानी अब तक की बेहतरीन कहानी है। इसमें सबसे सही, सबसे गहरा और सबसे शुद्ध आकर्षण है।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!